Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
January to March 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLV

वागड़ क्षेत्र के ऐतिहासिक व धार्मिक स्थल एवं पर्यटन

प्रकाश यादव*

* शोधार्थी (इतिहास) गोविन्द गुरू जनजातीय विश्वविद्यालय, बांसवाड़ा (राज.) भारत

प्रस्तावना – अतीत के अध्ययन से मानवीय जीवन मे कई तथ्यों एवं साक्ष्यों की परख के पश्चात् पूर्व कालीन संस्कृति की परम्परा को अपने हृदय पटल पर संजोये रखा है, और इसी के चलते सांस्कृतिक विरासत ने मानव को सम्मान व आत्म-सम्मान प्राप्त करने में सहायता प्रदान की है। विरासत में मिली ऐतिहासिक धरोहरों, धार्मिक स्थलों, प्राचीन स्मारकों, सांस्कृतिक परिवेश ने आज हमें कथाओं, पौराणिक कथाओं, दंत कथाओं, शास्त्रों के माध्यम से त्याग, बलिदान, आस्था, श्रृद्धा और गौरवमयी इतिहास का निर्वहन करने में सदैव मार्गदर्शन दिया है। यह विषय सम्पूर्ण रूप से सम्मिलित भी कर लिया जाये तो उनमें नैतिकता की झलक देखने को मिलती है। **अतिथि देवो भव:** की यह परम्परा हमारे जहन में सदैव जीवित रहती है और यह हमने इतिहास से ही प्राप्त की है। इतिहास और पर्यटन का स्वरूप एक दूसरे पर पूर्ण रूप से निर्भर है। यदि किसी एक को अलग कर दिया जाये तो इसका स्वरूप और महत्व ही समाप्त हो जाएगा। इतिहास के बिना पर्यटन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। पर्यटन इतिहास के आँचल में पनप कर प्रफुल्लित हो रहा है।

राजस्थान भौगोलिक दृष्टि से देश का सबसे बड़ा राज्य है। यह भूमि साहस और वीरता के लिए प्रसिद्ध आन-बान और शान के लिए मर मिटने वाले रण बांकुरों की जन्म भूमि है। इसी राज्य के दक्षिणांचल में बाँसवाड़ा एवं डूंगरपर स्थित है, जो स्वतंत्रता पूर्व **'वागड़'** क्षेत्र के नाम से जाना जाता था। प्राकृत भाषा के विद्वान वागड़ शब्द की उत्पत्ति **'बग्गड़'** शब्द से स्वीकारते है, लेकिन संस्कृत भाषा परक व्युत्पत्ति को आधार मानकर कुछ विद्वान वागड़ शब्द की उत्पत्ति **वाग्गर** अथवा **वार्गवट** से होना बताते है।

वागड़ प्रदेश के बारे में कहा जाता है कि पहले यहाँ बाँसों की झाड़ियाँ थी जो प्रदेश बांसवाड़ा के नाम से जाना गया। इसी वागड़ के दूसरे कस्बे का नाम डूंगरपुर है जिसका नामकरण डूंगर का अर्थ पहाड़ से है जो (डूंगरपुर) होना बताया गया है। डूंगरपुर राजस्थान के दक्षिणी भाग 23 डिग्री 20 मिनिट और 24 डिग्री 01 मिनिट उत्तरी अक्षांशों के बीच तथा 73 डिग्री 22 मिनिट और 74 डिग्री 23 मिनिट पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है तथा इसका क्षेत्रफल 3700 वर्गकिमी है। इसी तरह से बाँसवाड़ा जिला भी 23 डिग्री 3 मिनिट और 23 डिग्री 55 मिनिट उत्तरी अक्षांश तथा 73 डिग्री 58 मिनिट और 74 डिग्री 47 मिनिट पूर्वी देशान्तर के बीच में स्थित है। इसका क्षेत्रफल 5037 वर्गकिमी है।

वागड़ प्रदेश की सीमा मालवा और गुजरात प्रांत से मिलती है। इन प्रदेशों के बीच अवस्थित पर्वत श्रेणियां एवं खुला मैदान है। जो वागड़ का उपजाऊ भाग है। इस प्रदेश की प्रमुख नदी माही नदी जिसे वागड़ की गंगा कहा जाता है, जो बहुधा साल भर बहती है। इसके अलावा अनास, हिरण, ऐराव, चाप तथा सोम आदि नदियाँ भी बहती है। वागड़ प्रदेश की जलवायु राजस्थान के उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र रेगिस्तान प्रदेश की अपेक्षा नम है। फिर भी गर्मियों में अधिकतम तापमान 46 डिग्री तक पहुंच जाता है। मई का माह सर्वाधिक गर्म रहता है। वनस्पति में यहां टीक, महुए के पेड़, कदम्ब, पीपल, बबूल प्रमुख रूप से पाये जाते है। इनसे रियासती काल में शहद, मोम, गोंद, लाख तथा घास की अच्छी उपज मिलती थी। वागड़ के धार्मिक जीवन में हिन्दु, जैन, इस्लाम व इसाई धर्म प्रचलित है। यहाँ की प्रमुख भाषा वागड़ी है जो गुजराती से अधिक संबंध रखती है। इसकी लिपि देवनागरी है। इस प्रदेश में सामान्य पोशाक (पुरुष) में पगड़ी, कुर्ता, लम्बा अंगरखा औरी धोती है एवं स्त्रियों की पोशाक में घाघरा, साड़ी, चौली तथा ओढ़नी का प्रचलन है।

दक्षिण राजपूताने में वागड़ ऐतिहासिक दृष्टि से बड़ा महत्वपूर्ण है, क्योंकि यहां पुरातत्व संबंधी सामग्री प्रचुर मात्रा में मिले हैं। अब तक के शोध से इतना ज्ञात होता है कि पहले यहाँ क्षत्रिय/क्षत्रप वंशीयों एवं परमारों का राज्य था। परमारों से गुहिलों ने वागड़ प्रदेश हथिया लिया था। गुहिल वंशी सामंत सिंह ने मेवाड़ से दक्षिण की तरफ जाकर वागड़ (बांसवाड़ा-डूंगरपुर) में गुहिलवंश राज की स्थापना की।

वागड़ क्षेत्र में पर्यटन स्थलों के रूप में राजा-महाराजाओं द्वारा बनाये गये महल, भवन, मंदिर, पोल, तालाब, झीलें एवं दरवाजें आदि प्राय: ध्वस्त होते जा रहे है। जिससे यह अब विलुप्त होते जा रहे है। उनकी पुन: मरम्मत का कार्य तथा इनके संरक्षण, सवंर्धन एवं रख-रखाव की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया है। वागड़ के प्रमुख ऐतिहासिक-धार्मिक स्थलों का उल्लेख पूर्व में किया गया है, लेकिन उनको पर्यटन की आधुनिक उभरती हुई छवि से परे रखा गया है। इन सभी स्थलों का ऐतिहासिक अध्ययन किया गया है, लेकिन पर्यटन के समय दृष्टिकोण से कार्य नहीं किया गया है।

वागड़ उत्तर में राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र, दक्षिण-पूर्व और पूर्व में मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र और पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम में गुजरात राज्य से घिरा हुआ है। यह क्षेत्र मुख्यत: माही नदी और उसकी सहायक नदियों के ऊपरी जलग्रहण क्षेत्र में स्थित है , जिसे वागड़ की जीवन रेखा कहा जाता है। माही नदी मध्य प्रदेश के विंध्य पर्वतमाला में अपने उद्गम से जिले (बांसवाड़ा) से उत्तर की ओर बहती है, दक्षिण-पूर्व से जिले (बांसवाड़ा) में प्रवेश करती है और जिले के उत्तरी छोर की ओर उत्तर की ओर बहती है, जहाँ यह दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़कर गुजरात में प्रवेश करने से पहले बांसवाड़ा और डूंगरपुर जिलों के बीच सीमा बनाती है और खंभात की खाड़ी में गिर जाती है। यभारत की 2011 की जनगणना के अनुसार, इस क्षेत्र की जनसंख्या 3,186,037 है।

वागड़ में वनस्पति और जीव-जंतु समृद्ध हैं। जंगलों में मुख्य रूप से सागौन शामिल हैं। वन्यजीवों में तेंदुआ और चिंकारा जैसे जंगली जानवरों की एक बड़ी विविधता शामिल है। इस क्षेत्र में आम पक्षियों में मुर्गी , तीतर , काला ड्रोंगो, ग्रे श्राइक, हरा मधुमक्खी-भक्षक , बुलबुल और तोता शामिल हैं। इस क्षेत्र के कुछ शहर आसपुर, भीलूड़ा, सिमलवाड़ा, सागवाड़ा, परतापुर, बागीदरा और गढ़ी हैं।

पर्यटन विभाग, उदयपुर ने वर्ष 2016 में ट्राइबल ट्यूरिज्म सर्किट तैयार करने के लिए राज्य सरकार के माध्यम से केन्द्र सरकार को फाइल भेजी थी। इस सर्किट में उदयपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, सिरोही व प्रतापगढ़ को जोड़ा गया था। इस सर्किट के विकास व विस्तार के लिए 9958.14 लाख रुपए का प्रोजेक्ट तैयार किया गया था। इस प्रोजेक्ट को यदि ट्राइबल सर्किट के रूप में स्वीकारा जाता तो ये सभी जिले पर्यटन की मुख्यधारा से जुड़ जाएंगे। पूरे क्षेत्र का पर्यटन के नजरिए से विकास होगा और सैकड़ों को रोजगार मिलेगा। साथ ही जनजाति क्षेत्र के पर्यटन स्थलों को बेहतर सड़कों व सुविधाओं से जोड़ा जाएगा।

- **बांसवाड़ा जिला** - कागदी पीकअप वीयर, भंडारिया हनुमानजी व समाई माता मदारेश्वर, कल्प वृक्ष, सिद्धी विनायक, डायलाब तालाब, तलवाड़ा त्रिपुरा सुन्दरी, रामकुंड, अरथूना हनुमान मंदिर मानगढ़, घोटिया-आम्बा, छीछ, अंदेश्वर-पार्श्वनाथ, मंगलेश्वर, भैरवजी, नंदनी माता, भीमकुंड, माही डेम, चाचा कोटा, जगमेरू , हनुमान मंदिर।
- **डूंगरपुर जिला** - गेप सागर, मुरला गणेश मंदिर, सरकारी म्यूजियम, बेणेश्वर धाम, देवसोमनाथ मंदिर, क्षेत्रपालजी मंदिर, विजवा माता जी मंदिर, बरोड़ा भुवनेश्वर महादेव, जीनागफणजी, आशापुरा माताजी, बोरेश्वर जी, गोरेश्वर जी भीलूड़ा।

डूंगरपुर - उतना ही आकर्षक है जितना कि यहाँ पाया जाने वाला हरा संगमरमर और दुनिया भर में भेजा जाने वाला पत्थर और अरावली पर्वतमाला की तलहटी में बसा यह शहर। उत्तर-पूर्व में कठोर और जंगली और दक्षिण-पश्चिम के उपजाऊ मैदानों में जीवन से भरपूर, यह दो नदियों, माही और सोम द्वारा सिंचित है। डूंगरपुर की पर्यटकों के बीच प्रसिद्धि का कारण इसके महलों और शाही निवासों की असाधारण वास्तुकला है। ये पत्थर की संरचनाएँ 'झरोखों' (खिड़कियों) से सजी हैं और महारावल शिव सिंह (1730-1785 ई।) के समय में पैदा हुई शैली में बनी हैं। डूंगरपुर के सुनार और चांदी के कारीगर कुशल कारीगर हैं जो अपने लाख से रंगे खिलौनों और तस्वीरों के फ्रेम के लिए प्रसिद्ध हैं। डूंगरपुर की स्थापना 1258 ई। में मेवाड़ के शासक करण सिंह के सबसे बड़े बेटे रावल वीर सिंह ने की थी, जब उन्होंने स्थानीय भील सरदार डुंगरिया को बाहर निकाल दिया था। डूंगरपुर के बाद के शासकों ने शहर की स्थापत्य विरासत में इजाफा किया।

उदय बिलास पैलेस - उदय बिलास पैलेस का नाम महारावल उदय सिंह द्वितीय के नाम पर रखा गया है। इसका आकर्षक डिजाइन क्लासिक राजपूत स्थापत्य शैली का अनुसरण करता है और इसकी बालकनियों, मेहराबों और खिड़कियों में विस्तृत डिजाइन का दावा करता है। पारेवा नामक स्थानीय नीले-भूरे पत्थर से बना एक सुंदर विंग झील को देखता है। महल को रनिवास, उदय बिलास और कृष्ण प्रकाश में विभाजित किया गया है, जिसे एक थमबिया महल के नाम से भी जाना जाता है। एक थमबिया महल राजपूत वास्तुकला का एक वास्तविक चमत्कार है जिसमें जटिल मूर्तिकला वाले खंभे और पैनल, अलंकृत बालकनियाँ, कटघरा, ब्रैकेट वाली खिड़कियाँ, मेहराब और संगमरमर की नक्काशी की झालरें हैं। आज, उदय बिलास पैलेस एक हेरिटेज होटल के रूप में कार्य करता है।

जूना महल

जूना महल - जूना महल (पुराना महल) 13वीं सदी का सात मंजिला भवन है। यह पारेवा पत्थर से बने एक ऊंचे चबूतरे पर बना है और इसका ऊबड़-खाबड़ बाहरी हिस्सा इसे एक किले जैसा बनाता है। इसे किलेबंद दीवारों, निगरानी टावरों, संकरे दरवाजों और गलियारों के साथ विस्तृत रूप से योजनाबद्ध किया गया है ताकि दुश्मन को यथासंभव लंबे समय तक रोका जा सके। अंदर जो है वह बाहरी हिस्से से बिल्कुल अलग है। आगंतुक सुंदर भित्ति चित्र, लघु चित्रकारी और नाजुक कांच और दर्पण के काम को देखकर मंत्रमुग्ध हो जाएंगे जो अंदरूनी हिस्से को सजाते हैं।

गैब सागर झील - यह झील श्रीनाथजी के मंदिर के लिए प्रसिद्ध है जो इसके किनारे पर स्थित है। मंदिर परिसर में कई बेहतरीन नक्काशीदार मंदिर और एक मुख्य मंदिर, विजय राजराजेश्वर मंदिर है। भगवान शिव का यह मंदिर डूंगरपुर के प्रसिद्ध मूर्तिकारों या श्शिल्पकारोंश की कुशल शिल्पकला को प्रदर्शित करता है।

सरकारी पुरातत्व संग्रहालय - इस संग्रहालय की स्थापना राजस्थान सरकार के पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग द्वारा मुख्य रूप से वागड़ क्षेत्र से एकत्रित मूर्तियों को प्रदर्शित करने के उद्देश्य से की गई थी। डूंगरपुर राजपरिवार ने संग्रहालय की स्थापना में भूमि और आकर्षक मूर्तियों और ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण शिलालेखों के अपने निजी संग्रह को उपहार में देकर मदद की। यहाँ रखे गए संग्रह में विभिन्न देवताओं की मूर्तियाँ, पत्थर के शिलालेख, सिक्के और 6वीं शताब्दी की पेंटिंग शामिल हैं।

बादल महल - पारेवा पत्थर से बना बादल महल डूंगरपुर का एक और शानदार महल है। गैबसागर झील के किनारे स्थित यह महल अपनी विस्तृत डिजाइन और राजपूतों और मुगलों की स्थापत्य शैली के मिश्रण के लिए प्रसिद्ध है। स्मारक में दो मंच, तीन गुंबद और एक बरामदा है। प्रत्येक गुंबद पर एक नक्काशीदार आधा पका कमल है जबकि सबसे बड़े गुंबद पर तीन कमल हैं।

बैणेश्वर धाम

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
January to March 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLV

आदिवासियों का प्रयाग राज बैणेश्वर धाम (मंदिर) – इस क्षेत्र का सबसे प्रतिष्ठित शिव लिंग युक्त बेणेश्वर मंदिर सोम और माही नदियों के संगम पर बने डेल्टा पर स्थित है। माना जाता है कि यह लिंग स्वयंभू है। यह पाँच फीट ऊँचा है और ऊपर से पाँच भागों में टूटा हुआ है। बेणेश्वर मंदिर के पास ही विशु मंदिर है जिसका निर्माण 1793 ई. में जनकुंवरी ने करवाया था, जो मावजी की पुत्रवधू थीं। मावजी एक अत्यंत पूजनीय संत थे और उन्हें भगवान विष्णु का अवतार माना जाता था। कहा जाता है कि मंदिर का निर्माण उस स्थान पर हुआ था जहाँ मावजी ने अपना समय भगवान की प्रार्थना में बिताया था। मावजी के दो शिष्यों अजे और वाजे ने लक्ष्मी नारायण मंदिर का निर्माण कराया था। हालाँकि ये अन्य देवी-देवता हैं, लोग इन्हें मावजी, उनकी पत्नी, उनके बेटे, उनकी पुत्रवधू और शिष्य जीवनदास के रूप में पहचानते हैं। इन मंदिरों के अलावा, भगवान ब्रह्मा का एक मंदिर भी है।

बेणेश्वर में लगने वाला सबसे बड़ा आदिवासी मेला जो माही, सोम और जादखम नदियों के संगम पर है। राजस्थान, गुजरात और मध्य प्रदेश से बड़ी संख्या में आदिवासी मृतकों की अस्थियों को विसर्जित करने के लिए एकत्रित होते हैं। यह मेला फरवरी के महीने में माघ पूर्णिमा को लगता है, जिसे इस क्षेत्र में पवित्र समय माना जाता है। रंग-बिरंगे आदिवासी परिधान, आभूषण, लोक नृत्य देखने लायक होते हैं।

गलियाकोट – डूंगरपुर से 58 किलोमीटर की दूरी पर माही नदी के किनारे स्थित गलियाकोट नामक एक गांव है। यह जगह सैयद फखरुद्दीन की दरगाह के लिए मशहूर है। वह एक प्रसिद्ध संत थे, जिन्हें उनकी मृत्यु के बाद इसी गांव में दफनाया गया था। यह दरगाह सफेद संगमरमर से बनी है और इसकी दीवारों पर उनकी शिक्षाएँ उकेरी गई हैं। गुंबद के अंदरूनी हिस्से को खूबसूरत पत्तियों से सजाया गया है जबकि कब्र पर कुरान की शिक्षाएँ सुनहरे अक्षरों में उकेरी गई हैं।

देव सोमनाथ

देव सोमनाथ – सोम नदी के तट पर, 12वीं शताब्दी में निर्मित देव सोमनाथ नामक एक पुराना और सुंदर शिव मंदिर है। सफेद पत्थर से निर्मित इस मंदिर में भव्य बुर्ज हैं। मंदिर के भीतर से आकाश को देखा जा सकता है। यद्यपि चिनाई में भागों का एकदम सही अनुकूलन है, फिर भी ऐसा लगता है कि अलग-अलग पत्थर टूट रहे हैं। मंदिर में 3 निकास हैं, एक-एक पूर्व, उत्तर और दक्षिण में। प्रवेश द्वार दो मंजिला हैं। गर्भगृह में एक ऊंचा गुंबद है। इसके सामने सभा मंडप है – जो 8 राजसी स्तंभों पर बना है। बीस तोरण हैं जिनमें से चार अभी भी मौजूद हैं। अन्य सोम के बाढ़ के पानी से नष्ट हो गए थे। देवता की मूर्ति एक कक्ष में है, जो आठ सीढ़ियाँ नीचे है और प्रवेश द्वार सभा मंडप से है। तीर्थयात्रियों द्वारा कई शिलालेख हैं और सबसे पुराना 1493 ई. का है। मंदिर के पास कई योद्धाओं का अंतिम संस्कार किया गया था और उनके सम्मान में स्मारक बनाए गए हैं।

परमारवंशीय शासकों की साधना का केन्द्र- गलियाकोट की शीतला माता – डूंगरपुर जिलांतर्गत माही नदी के किनारे-किनारे स्थित ऐतिहासिक महत्व के स्थल गलियाकोट में शीतला माता का प्राचीन मन्दिर है। परमार वंश के राजाओं की जागीर रहे इस स्थान पर यह देशभर में एकमात्र ऐसा मंदिर है जिसकी आज भी छत नहीं बनाई गई है। शीतला माता का यह प्राचीन मन्दिर शाक्त साधना का केन्द्र रहा है। गर्भगृह में देवी शीतला की स्वयभू श्वेत प्रस्तर की प्रतिमा के बारे में बताया जाता है कि यह प्रतिमा 13 फीट बड़ी है और इसका आधे से ज्यादा भाग जमीन में दबा है। बड़ी संख्या में चर्म रोगों से ग्रस्त लोग यहां पर आते हैं और देवी की मन्नत मांगते है। लोक मान्यतानुसार के अनुसार इस देवी तीर्थ का संबंध गुजरात के प्रसिद्ध शक्तिपीठ पावागढ़ से है। देवी शीतला के प्रति श्रद्धालुओं में अगाध आस्थाएं है। इस कारण मन्दिर में श्रद्धालुओं का जमघट लगा ही रहता है।

बांसवाड़ा – बांसवाड़ा जिला भारत में दक्षिण राजस्थान में स्थित है। बांसवाड़ा रियासत की स्थापना महारावल जगमाल सिंह ने की थी। इसका नाम क्षेत्र में 'बांस' या बांस के जंगलों के लिए रखा गया है। बांसवाड़ा से होकर बहने वाली माही नदी में कई द्वीपों की उपस्थिति के कारण इसे **'सौ द्वीपों का शहर'** भी कहा जाता है। बांसवाड़ा जिला वागड़ या वागवार के नाम से जाने जाने वाले क्षेत्र का पूर्वी भाग बनाता है। जिला पूर्व में महारावलों द्वारा शासित एक रियासत थी। ऐसा कहा जाता है कि एक भील शासक बंसिया या वासना ने इस पर शासन किया था और बांसवाड़ा का नाम उनके नाम पर रखा गया था। बंसिया को जगमाल सिंह ने हराया और मार डाला, जो रियासत के पहले महारावल बने। बांसवाड़ा जिला जंगलों, पहाड़ियों और वन्य जीवन से समृद्ध है। आदिवासी इस क्षेत्र के मूल निवासी हैं। यह स्थान अपने प्राचीन मंदिरों और प्राकृतिक सुंदरता के लिए 'लोधी काशी' के रूप में जाना जाता है।

त्रिपुरा सुंदरी

ख्यातिप्राप्त शक्तिपीठ – त्रिपुरा सुंदरी – लोढ़ी काशी के नाम से ख्यात बांसवाड़ा जिले में श्रद्धालुओं की अगाध आस्था का धाम त्रिपुरा सुन्दरी मंदिर स्थित है। इस शक्तिपीठ के प्रति न सिर्फ स्थानीय श्रद्धालुओं अपितु कई विशिष्ट-अतिविशिष्टजनों की आस्थाएं जुड़ी हुई है। राजस्थान, मध्यप्रदेश और गुजरात के कई ख्यातनाम राजनीतिज्ञों की श्रद्धा के केन्द्र होने के कारण देवी त्रिपुरा के दरबार में देवीभक्तों का सैलाब उमड़ता ही रहता है। जिला मुख्यालय से 20 किमी दूर तलवाड़ा कस्बे के समीप उमराई गांव में स्थित शक्तिपीठ त्रिपुरा सुन्दरी मंदिर में देवी की सिंह पर सवार अष्टादश भुजा वाली विशाल प्रतिमा है जिसे श्रद्धालु त्रिपुरा सुंदरी, तरतई माता व त्रिपुरा महालक्ष्मी के नाम से संबोधित करते है। श्यामवर्णा विशाल पाषाण प्रतिमा का ओज कुछ खास ही है जो श्रद्धालुओं को दूर से ही सम्मोहित करता प्रतीत होता है। देवी प्रतिमा का प्रतिदिन अलग-अलग रंगों के वस्त्राभूषणों में

श्रृंगार किया जाता है। इस मंदिर की गिनती प्राचीन शक्तिपीठों में होती है। देवी के चरणों के नीचे श्री यंत्र अंकित होने के कारण इसका विशेष महत्तव है। मंदिर में विक्रम संवत 1540 का एक शिलालेख है। यह भी बताया जाता है कि इस मंदिर के आसपास तीन दुर्ग थे, जिनके नाम शीतापुरी, शिवपुरी व विष्णुपुरी था। इन तीनों दुर्गों के बीच में मंदिर होने से इसे त्रिपुरा कहा जाने लगा। मंदिर में चौत्र व आश्विन नवरात्रि पर विविध धार्मिक आयोजन होते है और इस दौरान इस धाम पर देवीभक्तों का सैलाब उमड़ता रहता है।

वागड़ का पावागढ़ - नन्दनी माता - गुजरात के प्रसिद्ध देवी तीर्थ पावागढ़ का प्रतिरूप एक ऐसा ही देवीधाम है बांसवाड़ा जिला मुख्यालय से 22 किलोमीटर दूरी पर बड़ोदिया कस्बे के पास स्थित नन्दनी माता तीर्थ, जिसे यहां के श्रद्धालु 'वागड का पावागढ़' के नाम से जानते हैं। नेशनल हाईवे 113 पर सड़क किनारे छितराई अरावली पर्वतश्रृंखला की एक विशाल पर्वतचोटी पर अवस्थित देवी तीर्थ नन्दनी माता श्रद्धालुओं की आस्थाओं का प्रमुख धाम है। विशाल पर्वत पर स्थित होने पर भी श्रद्धालुओं के लिये यह स्थान अब दुर्गम नहीं है क्योंकि पहाड़ की तलहटी से ही पश्चिम और पूर्व भाग में 500-500 व्यवस्थित सीढियाँ बनाई जा चुकी हैं। इस विशाल पहाड़ी पर चढ़ने के रोमांचक अनुभव के साथ ही जिले की सरहदों को उंचाई से देखने के आनंद उठाने के लिये श्रद्धालु यहां नवरात्रि व अवकाश के दिनों के आते रहते है। नन्दनी माता तीर्थ पर मुख्य मंदिर में देवी नन्दनी की श्वेत वर्णा पाषाण प्रतिमा है सिंहवाहिनी अष्टभुजाधारी मां नन्दनी के प्रति यहां की आदिम संस्कृति में बेहद आस्थाएं है। नन्दा नामक इसी देवी का उल्लेख दुर्गा सप्तशती के ग्यारहवें अध्याय के 42 वें श्लोक में मिलता है।

'नन्दगोपगृहे जाता, यशोदा गर्भ संभवा,
ततस्तौ नाशयिष्यामि विंध्याचल निवासिनी ।।'

साथ ही दुर्गा सप्तशती के मूर्तिरहस्य प्रकरण में देवी की अंगभूता छ: देवियों में नंदा देवी को ही सबसे पहले उल्लिखित किया गया है। आदिवासियों के प्राचीन गरबों और गीतों में आज भी इस देवी की प्राचीनता का बखान प्रमुखता से प्राप्त होता है। बड़ोदिया में वर्तमान कुंहार जाति के वाशिन्दें समीपस्थ गांवों के मूल निवासी माने जाते है।

मानगढ़ धाम

मानगढ़ धाम - मानगढ़ धाम आदिवासियों के नरसंहार के लिए जाना जाता है जो जलियांवाला बाग से छह साल पहले हुआ था और कभी-कभी इसे **आदिवासी जलियांवाला** के रूप में भी जाना जाता है।

ब्रिटिश सेना ने 17 नवंबर 1913 को राजस्थान और गुजरात की सीमा पर मानगढ़ की पहाड़ियों में सैकड़ों भील आदिवासियों की हत्या कर दी थी। यह गुजरात-राजस्थान सीमा पर स्थित एक जिला है, जो एक बड़ी जनजातीय आबादी वाला क्षेत्र है। समाज सुधारक गोविंद गुरु ने 1913 में ब्रिटिश राज के खिलाफ मानगढ़ में आदिवासियों और वनवासियों की सभा का नेतृत्व किया था। 19वीं शताब्दी में मानगढ़ टेकरी पर अंग्रेजी फौज ने आदिवासी नेता और समाज सेवक गोविंद गुरु के 1,500 समर्थकों को गोलियों से भून दिया था। शहादत की याद में आज यह धाम ऐतिहासिक होने के साथ साथ पर्यटन स्थल के रूप अपनी अहम् भूमिका रखता है।

मंदारेश्वर मंदिर - भगवान शिव को समर्पित एक प्राकृतिक गुफा के अंदर पहाड़ी पर बसा यह मंदिर आपको उंचाई से सुंदर दृश्य देखने का मौका देगा। मंदारेश्वर मंदिर बांसवाड़ा में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है क्योंकि यह शहर की हलचल से दूर सकारात्मक ऊर्जा और एक खूबसूरत नजारा प्रदान करता है। यह मंदिर बांसवाड़ा-रतलाम रोड पर बांसवाड़ा के भूतल से लगभग 500 फीट ऊपर स्थित है। पारंपरिक लेकिन आरामदायक कपड़े पहनने और धूम्रपान या पान चबाने से बचने की सलाह दी जाती है।

कागदी पिक अप- कागदी पिक अप वियर बांसवाड़ा में घूमने के लिए आश्चर्यजनक स्थानों में से एक है और सूर्यास्त और सूर्योदय के दौरान एक आदर्श स्थान है। एक सुखद पिकनिक स्थान जहाँ आप बिना किसी व्यवधान के अपने प्रियजनों के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिता सकते हैं। आकर्षण में एक छोटा बगीचा, झील का किनारा, एक भव्य मंदिर और बच्चों के लिए एक खेल का मैदान है। बेहतर अनुभव के लिए, आप झील में नौका विहार कर सकते हैं और गंतव्य के पानी के किनारे के दृश्य का आनंद ले सकते हैं।

माही बजाज सागर बांध

माही बजाज सागर बांध - माही पश्चिमी भारत की एक नदी है। यह मध्य प्रदेश से निकलती है और राजस्थान के वागड़ क्षेत्र से होकर गुजरात में प्रवेश करती है और अरब सागर में मिल जाती है। माही नदी की पूजा बहुत से लोग करते हैं और इसके किनारे पर बहुत सारे मंदिर और पूजा स्थल हैं। नदी की विशालता के कारण इसे लोकप्रिय रूप से महीसागर के नाम से जाना जाता है। माही बजाज सागर बांध माही नदी पर बना एक बांध है। यह भारत के राजस्थान के बांसवाड़ा जिले के बांसवाड़ा शहर से 16 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और इसका निर्माण 1972 और 1983 के बीच माही नदी पर किया गया था। यह 141 फीट की ऊंचाई वाला सबसे बड़ा बांध है और 9,905 फीट की लंबाई वाला राजस्थान का सबसे लंबा बांध है। यह पनबिजली और पानी की आपूर्ति का एक बड़ा स्रोत है। इस बांध की परिसीमा पर सरकार द्वारा पानी को रोकने के और निकासी के लिए 16 गेट का निर्माण करवाया गया है बांध के पूर्ण भरने पर जरुरत पड़ने पर गेटो को खोला जाता है जल राशि के गिरने का दृश्य बड़ा मनोरम लगता है।

अर्थुना मंदिर

अर्थुना मंदिर – इस जगह का पुराना नाम उत्थुनाक था। यह ग्यारहवीं–बारहवीं शताब्दी के दौरान वागड़ के परमार शासकों की राजधानी थी। उन्होंने जैन और शैव धर्म दोनों को एक साथ संरक्षण दिया, इसलिए उन्होंने कई शिव और जैन मंदिर बनवाए। परमार राजकुमार चामुंडराज के एक शिलालेख में दर्ज है कि उन्होंने 1079 ई. में अपने पिता के सम्मान में मंडलेसा नामक शिव का एक मंदिर बनवाया था। 1080 ई. के एक अन्य शिलालेख में उल्लेख है कि उनके अधिकारी के पुत्र अनंतपाल ने भी शिव का एक मंदिर स्थापित किया था। हनुमानगढ़ी के रूप में ज्ञात मंदिरों के समूह में नीलकंठ महादेव मंदिर, अन्य मंदिरों और एक सीढ़ीदार कुंड के अलावा स्थित है। यहां तीन शिव मंदिर हैं। यह स्थान शैव धर्म के लकुलीसा संप्रदाय से जुड़ा था। हनुमान और विष्णु के मंदिर भी प्रारंभिक काल के हैं। भूषण ने 1190 ई. में एक जैन मंदिर बनवाया था। कुछ जैन स्तंभ भी इस स्थल पर पाए गए हैं जो शायद 11वीं शताब्दी के बाद बनाए गए थे। इस स्थल पर एक अन्य मंदिर चौंसठ योगिनियों का है।

भारत सरकार ने पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए बाँसवाड़ा एवं डूंगरपुर में पर्यटन केन्द्र की स्थापना की है। यहां पर पर्यटन स्थलों की सही ऐतिहासिक जानकारी के अभाव में यह पर्यटन केन्द्र अभी तक सही विकास कार्य नहीं कर पाये है, किन्तु जिला प्रशासन की ओर से समय–समय पर छोटी–छोटी पुस्तकें प्रकाशित करके पर्यटन स्थलों को बढ़ावा देने की कोशिश निरन्तर जारी हे। पर्यटन स्थलों का विकास पूर्ण रूप से नहीं होने पर पर्यटक इस क्षेत्र की तरफ ज्यादा आकर्षित नहीं हो पा रहे है।

पर्यटन के आधार की अवधारणा के अनुसार ज्ञात होता है कि किसी भी राज्य का इतिहास व अस्तित्व का आधार पर्यटन की समग्र व्यवस्था मानी गयी है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में वागड़ में पर्यटन के बारे में हमारी कल्पना यही है कि इतिहास का विद्यार्थी होने के नाते वागड़ क्षेत्र में छिपे पर्यटन स्थलों को बढ़ावा देकर यहाँ के लोगों को उनकी उपयोगिता बताना है। साथ ही इन पर्यटन स्थलों की ऐतिहासिक जानकारी पूरे देश के लोग इन पर्यटन स्थलों की उपयोगिता समझे और यहां के पर्यटन स्थलों पर आकर आनन्द ले अत: इस प्रकार से यहां के लोगों में जागृति, चेतना, सांस्कृतिक समन्वय को बढ़ावा मिले जिससे यहां पर रोजगार के अवसर भी उपलब्ध हो सके यही भी मेरी कल्पना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. एल. आर. भल्ला – राजस्थान का भूगोल, कुलदीप पब्लिकेशन, अजमेर, 1985
2. विनोद चंद्र मिश्रा– राजस्थान का भूगोल, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली 1996
3. गोपीनाथ शर्मा – राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 1989
4. मोतीलाल व्यास – राजस्थान के अभिलेख, राजस्थान साहित्य मंदिर, जोधपुर, 1980
5. डॉ. राजेश कुमार व्यास– पर्यटन, उदभव एवं विकास, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
6. डॉ. प्रतिभा – भारत में पर्यटन, उत्पाद एवं सांस्कृतिक – ऐतिहासिक विरासत, ए.बी.डी. पब्लिशर्स जयपुर 2010
7. शरदचंद्र पंड्या – वागड़ नी संस्कृति, अंकुर प्रकाशन, उदयपुर 1999
8. डॉ. मोहन लाल गुप्ता– राजस्थान जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधुपर 2004
9. पंडित गोरीशंकर हीराचंद ओझा– बांसवाड़ा राज्य का इतिहास, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधुपर 1998
10. हिम्मतलाल त्रिवेदी – बाँसवाड़ा राज्य का सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राजनैतिक चेतना का इतिहास
11. डॉ. करूणा जोशी – बेणेश्वर धाम, ब्रह्मा मंदिर ब्राह्मण उत्पति एवं विकास 2005
12. राजेश्वर गर्ग – राजस्थान के पर्यटन स्थल, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाशन, जोधपुर 2002
13. https://en.wikipedia.org/wiki/Vagad
14. https://www.tourism.rajasthan.gov.in/dungarpur.html
15. https://hellobanswara.com/article/Nine-Dham-of-Alokit-Shakti-in-wagad-2858-20170921
16. https://www.patrika.com/udaipur-news/tourism-found-wings-in-mewar-vagad-after-getting-a-tribal-circuit-5050898
17. https://en.wikipedia.org/wiki/Arthuna

****